भजन

धीरे धीरे मेरे सरकार चले आते हैं
अर्श की रूहों के भरतार चले आते हैं

1- माया की चाह ने सब अर्श के सुख छीन लिए
नजर फिरते ही सितम माया ने हम पर हैं किए
लाड फिर अर्श का देने वो चले आते हैं

2- धाम के दुल्हा ने तन माया का ये धार लिया
अर्श की खिलवत का खोल के इजहार किया
सुराही इश्क की ले जाम वो पिलाते हैं

3- अर्श की लज्जत का जब आप ब्यां करते हो
रूह तरसे है मेरी जामे इश्क पीने को
संजमें संजमें अपनी नजरों से वो पिलाते हैं